

लगने लगती है तो उन्नति के दरवाजे बंद हो जाते हैं।

### आज ज़माना है सहयोग का

आप अपनी प्रगति की तुलना दूसरों से करने से तीन तरह के दोषों के शिकार हो सकते हैं, या तो स्वयं को दूसरों से हीन समझोगे या श्रेष्ठ समझोगे या उनसे प्रभावित हो जाओगे। तीनों ही स्थितियाँ हानिकारक हैं। पहले ज़माना था Comparison (तुलना) का, फिर जमाना आया Competition (कुछ करके उनसे आगे बढ़ना) का और आज ज़माना चल रहा है Co-operation (सहयोग) का। आजकल लोग दूसरों को मदद करके अपने को महान साबित करते हैं। कहते हैं, 'बराबरी का सौदा माना युद्ध और समझदारी का सौदा अर्थात् विजय।'

**हम आज जो हैं**

**उससे आगे जाना है**

तुलना करना मनुष्य का स्वभाव है ही नहीं। मनुष्य जो है उससे उसे और आगे जाना है अर्थात् आज मैं जो हूँ, जैसा हूँ, मुझे कल उससे और आगे जाना है। आगे बढ़ सकेंगे हम चरित्र बल से। आज से पाँच हजार वर्ष पहले इस पृथ्वी पर जो रहते थे, उनको देवता कहा जाता था क्योंकि उनके अंदर मनुष्यों से बढ़कर गुण थे और आज भी अगर कोई दान-पुण्य करता

है, परोपकार या समाज सेवा करता है तो हम कहते हैं, यह तो मनुष्य नहीं लेकिन देवता है। और जब देवता तो छोड़ो लेकिन मनुष्य जैसे गुण भी दिखाई नहीं पड़ते हैं तब हम कहते हैं, यह तो जानवर से भी बदतर है। आत्म-सम्मान खो देने पर वह मनुष्य भी नहीं रह जाता और जब आत्म-सम्मान युक्त बनता है, स्वयं का सही मूल्यांकन करता है, स्वयं को उचित मान देता है तो मानव से आगे देव-तुल्य बन सकता है।

वास्तव में जीवन जीना एक कला है और श्रेष्ठ जीवन जीना एक महान तपस्या है जिसके लिए अधिक मेहनत व समझ की आवश्यकता पड़ती है। आत्म-सम्मान से जीना यही श्रेष्ठ जीवन है, न कि तुलना करके जीना। हम उन्हीं महान हस्तियों को याद करते हैं जो आत्म-सम्मान से इस संसार में रहकर गये हैं। जिन्होंने तुलना की, उनका सर्वनाश हो गया क्योंकि तुलनात्मक स्वभाव में ईर्ष्या, क्रोध, नफरत, अभिमान सारे अवगुण आ जाते हैं।

**अपनी योग्यता छिपाना**

**भी अपने से छल है**

आत्म-सम्मान का आधार है स्व पर नियंत्रण। नियंत्रण तब होगा जब हम स्व को जानने की कोशिश करेंगे। आज आवश्यकता है अपने वास्तविक स्वरूप को पहचानने की।

वास्तविक स्वरूप ही संपूर्ण है क्योंकि उसको बनाने वाला स्वयं परमपिता परमात्मा शिव है जो कि स्वयं संपूर्ण है। अपनी वा दूसरों की त्रुटियाँ देखने वाला स्वरूप वास्तव में हमारा सच्चा स्वरूप नहीं है। अतः व्यक्ति अपने सत्य स्वरूप को पहचान कर ही संतुष्ट हो सकता है। सत्य स्वरूप है आत्मस्वरूप। हम अजर, अमर आत्मा हैं जिन्हें काल खा नहीं सकता। आत्मा ज्योतिस्वरूप है जिसमें ज्ञान, पवित्रता, शान्ति, प्रेम, सुख, आनन्द और शक्ति – ये सात मौलिक गुण भरे हैं। इन गुणों का चिन्तन करना, इनको व्यवहार में लाना और हर परिस्थिति में इन्हें सुरक्षित रखना ही आत्म-सम्मान है। इसी से जागृत होता है आत्म-विश्वास। अतः अपने इन गुणों, शक्तियों और बुद्धिमत्ता को पहचानिये, प्रयोग कीजिए और बढ़ाइये। अगर आप अपनी योग्यता का प्रयोग नहीं कर रहे हैं तो आप अपने आप से छल कर रहे हैं। स्वयं को धोखा दे रहे हैं। धोखा देना अर्थात् आप स्वयं की शक्तियों को अच्छे कार्य में प्रयोग न करके, तुलना द्वारा व्यर्थ कर रहे हैं। आपमें अनेक विशेषतायें हैं जो औरों में नहीं हैं। उन्हें पहचानें और उनका प्रयोग करें। आप पायेंगे, आप दुनिया के सबसे संतुष्ट व्यक्ति हैं। याद रखिये, जो संतुष्ट है, वही रिचेस्ट इन द वर्ल्ड है। ❖